घाट बट को अति बड़ो, जल लिए चल्या किनार।
कई बन इत बहु विध के, जानों बने दोरी बंध हार।।५०।।

बट का घाट बहुत बड़ा है और जमुनाजी के किनारे पर जल तक फैला है। इस तरह से दोरी बन्द हार (कतार) में यमुनाजी के किनारे पर कई तरह के वृक्ष आए हैं।

सातों घाट ए कहे, आगे पुल कुंज बन।
अपना खजाना एह है, महामत कहे मोमिन।।५१।।

सातों घाटों का वर्णन किया। आगे बट का पुल है और उससे आगे कुंजवन की शोभा है। श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो यह अपनी न्यामत है। इसे सदा चित्त में धारण करो।

।। प्रकरण ।। ६ ।। चौपाई ।। ४१९ ।।

कुंज बन मंदिर

सातों घाट बीच में, पुल मोहोल तरफ दोए।
दोऊ पांच भोम छठी चांदनी, क्यों कहूं सोभा सोए।।१।।

दोनों पुलों के बीच में सुन्दर सात घाट शोभित है। इन दोनों पुलों की पांच भोम छठी चांदनी है। इसकी शोभा कैसे कहूं?

साम सामी झरोखे, झलकत अति मोहोलात।
पुल दोऊ दूजी किनार लग, बीच जल ताल ज्यों सोभात।।२।।

दोनों पुलों के आमने-सामने के झरोखे (दरवाजे) सुन्दर शोभा देते हैं। दोनों पुल जमुनाजी के दोनों किनारे ताल जैसी शोभा देते हैं। जमुनाजी के दोनों किनारों पर जो २५० मन्दिर की पाल आई है उन पर बड़े वन की पांच हारें, पांच भोम छठी चांदनी आई है जो जमुनाजी के दो पुलों पर भोम से मिलती है इस तरह से जमुनाजी एक ताल ३५०० मन्दिर का लम्बा ५०० मन्दिर का चौड़ा लगता है।

तले दस घड़नाले पोरियां, बीच नेहेरें ज्यों चलत।
स्याम स्यामाजी सखियां, इन मोहोलों आए खेलत।।३।।

दोनों पुलों के दस घड़नाले (थंभों के बीच की जगह जहां से पानी बहता है) दस दरवाजों से निकलते हैं और ऐसा लगता है जैसे बीच में नहरें चल रही हों। श्री राजजी, श्री श्यामाजी और सखियां इस पुल के महलों में अक्सर खेलते हैं।

खेल करें जब इन मोहोलों, धनी सुख देत सैयन को।
कई विध खेल कहूं केते, आवें ना जुबां मों।।४।।

जब इन महलों में आकर खेलते हैं तो श्री राजजी महाराज सखियों को कई तरह से सुख देते हैं तथा कई तरह से खेल खेलते हैं। जिसका वर्णन यहां की जबान से नहीं होता।

इन मोहोल आगूं घाट केल का, इस तरफ आगूं बट घाट।
तीन बाएं तीन दाहिने, बीच घाट चांदनी पाट।।५।।

उत्तर की तरफ पुल के पास केल का घाट इसी तरह से दक्षिण की ओर पुल के पास बट का घाट है। पाट घाट बीच में है और दाएं-बाएं तीन-तीन घाट हैं।

Nijanand App

सात घाट को लेयके, आगूं आए अर्स द्वार।
इत पसु पंखी कई खेलत, ए सिफत न आवे सुमार।। ६ ।।

इन सातों घाटों की शोभा रंग महल के दरवाजे के सामने है। इन वनों में पशु-पक्षी खेलते हैं जिनकी सिफत शब्दों में नहीं आती।

चल्या गया बन ताललो, एकल छत्री अति भिल।
तलाव धाम के बीच में, आगूं निकस्या चल।। ७ ।।

इन घाटों के आगे दक्षिण की दिशा में एक छतरी के समान कुंजवन हौज कौसर तालाब तक गया है। यह कुंजवन, रंग महल और हौज कौसर के बीच में होता हुआ हौज कौसर तालाब को घेरकर अक्षर धाम तक फैला है।

जमुना धाम तलाव के, बीच में कई विवेक।
कुंजवन मंदिर कई रंगों, कहा कहूं रसना एक।। ८ ।।

जमुनाजी, रंग महल, हौज कौसर तालाब के बीच में कई तरह के रंगों से सजे कुंजवन के मन्दिर हैं। मैं अपनी इस जबान से इसकी शोभा कैसे बताऊं?

उज्जल रेती मोती निरमल, जोत को नाहीं पार।
आकास न मावे रोसनी, झलकारों झलकार।। ९ ।।

यहां की रेती बड़ी साफ और मोतियों के समान निर्मल है जिसके तेज का शुमार नहीं है। आकाश में इसकी रोशनी जगमगाहट करती है।

कई पुरे इन बन में, तिनके बड़े द्वार।
तिन द्वार द्वार कई गलियां, तिन गली गली मंदिर अपार।। १० ।।

इस कुंजवन में कई मोहल्ले (कालोनियां) हैं जिनके बड़े दरवाजे हैं। दरवाजे-दरवाजे में कई गलियां हैं और उन हर गलियों में मन्दिरों की शोभा बेशुमार है।

कई मंदिर इत फिरते, कई चारों तरफों मंदिर।
तिनमें कई विध गलियां, निकुंज बन यों कर।। ११ ।।

यहां पर कई मन्दिर गोलाई में बने हैं। कई मन्दिर चौरस हैं। उनमें कई तरह की गलियां हैं। इस तरह कुंज-निकुंज वन शोभा देता है।

मंदिर दिवालें गलियां, नकस फल फूल पात।
मंदिर द्वार देख देख के, पलक न मारी जात।। १२ ।।

इन कुंज-निकुंज मन्दिरों की दीवारें, गलियां, फल, फूल, पत्तों की नक्शकारी मन्दिरों के द्वार पर देखकर पलक झपकने की भी इच्छा नहीं होती।

कई पुरे कई छूटक, कई गलियां बने हुनर।
या गलियों या मन्दिरों, सब छाया बराबर।। १३ ।।

कई मोहल्ले, अलग-अलग गलियां, अलग-अलग चित्रकारियां जो मन्दिरों और गलियों में बनी हैं। इन सबकी शोभा एक जैसी बेशुमार है।

Nijanand App

इन बन बोहोतक बेलियां, सोभा अति सुन्दर।
फल फूल पात कई रंगों, या बाहेर या अन्दर।। १४ ।।

इस वन में बहुत तरह की बेलें बहुत सुन्दर शोभा देती हैं तथा अन्दर-बाहर से कई रंग के फल, फूल, पत्ते शोभा देते हैं।

कई छलकत जल चेहेबच्चों, करत झीलना जाए।
अतन्त खूबी इन बन की, क्यों कहूं इन जुबांए।। १५ ।।

चहबच्चों (हौज) में जल उछलता है जहां जाकर झीलना करते हैं, इस तरह से इस वन की खूबी बहुत है जो इस जबान से कहने में नहीं आती।

फूल पात जो कोमल, रगां तिनमें कोई नाहें।
तिनके सेज चबूतरे, कई बने जो मोहोलों माहें।। १६ ।।

यहां के कोमल फूल-पत्तों में नसें नहीं हैं। ऐसे ही फूल-पत्तों की सेज चबूतरे के समान कई महलों में बनी हैं।

इत कई रंग जवेरन के, तिन कई रंगों कई नूर।
ए मिसाल इनकी, आकास न माए जहूर।। १७ ।।

यहां कई रंग के जवेर (हीरे, मोती) झलकते हैं जिनकी शोभा अपार है। इसकी मिसाल नहीं है। इनकी शोभा की किरणें आकाश तक फैली हैं।

कई बन स्याह सुपेत हैं, कई बन हैं नीले।
कई बन लाल गुलाल हैं, कई बन हैं पीले।। १८ ।।

यहां पर कई वन काले हैं, कई सफेद, कई नीले, कई लाल, कई गुलाल व कई पीले रंग के हैं।

कई बन हैं एक रंग के, कई एक एक में रंग दस।
इन विध कई अनेक हैं, कई जुदे जुदे रंगों कई रस।। १९ ।।

कई वन एक ही रंग के हैं तथा कई में एक-एक में दस-दस रंग हैं। ऐसे कई तरह के अनेक वन हैं। उनमें अलग-अलग रंगों की शोभा बेशुमार है।

फल फूल छाया पात की, खुसबोए जिमी और बन।
आकास भरयो नूरसों, किया रेत बन रोसन।। २० ।।

फल, फूल, पत्तों की छाया व खुशबू, जमीन और वन पर फैली है। वन के ऊपर की रेत की रोशनी आकाश तक फैलती है।

अनेक मेवे कई भांत के, सो ए कहूं क्यों कर।
नाम भी अनेक मेवन के, और स्वाद भी अनेक पर।। २१ ।।

यहां कई तरह के मेवे के पेड़ हैं, उनको कैसे बताऊं, क्योंकि मेवे के पेड़ों के अनेक नाम और स्वाद हैं।

Nijanand App

कई मीठे मीठे मीठरड़े, कई फरसे फरसे मुख पर।
कई तीखे तीखे तीखरड़े, कई खट्टे खट्टे खटूबर।। २२ ।।

कई मीठे, फिर उससे अधिक मीठे तथा सबसे मीठे फल और मेवे हैं। इस तरह से कई खट्टे, कई उससे खट्टे और अधिक खट्टे हैं। कई फीके, उससे फीके और अधिक फीके फल और मेवे हैं और कई तीखे, अधिक तीखे और कई उससे भी अधिक तीखे मेवे और फल हैं।

इन एक एक में अनेक रस, रस रस में अनेक स्वाद।
इन विध मेवे अनेक रस, सो कहां लों बरनों आद।। २३ ।।

इन एक-एक मेवा और फल में तरह-तरह के रस हैं और उन रसों में भी अलग-अलग स्वाद हैं। इस तरह के मेवे, कई तरह के, कई रस के हैं। इनका वर्णन कैसे करूं।

कई मेवे हैं जिमी में, कई बेलियों दरखत।
कई मेवे फल की खलड़ी, कई रस बीज में उपजत।। २४ ।।

कई मेवे जमीन के हैं, कई बेलों के हैं जो वृक्षों पर चढ़ी हैं, कई मेवे फल की खाल हैं। बेर हैं, खजूर हैं और कई मेवे चिरौंजी और बादाम की तरह बीज के हैं।

बोहोत रेती इन ठौर है, निपट सेत उज्जल।
खेल खुसाली होत है, सखियां पांउं चंचल।। २५ ।।

यहां की रेत बड़ी सुन्दर है, उज्ज्वल है। यहां पर सखियां चंचलता के साथ खुश होकर खेलती हैं।

इत कई चौक छाया मिने, कहूं चांदनी चौक।
स्याम स्यामाजी सखियनसों, खेल करें कई जौक।। २६ ।।

यहां कई चौकों के ऊपर वृक्षों की छाया है और कई चौक खुले हैं। यहां श्री राजश्यामाजी सखियों से तरह-तरह के खेल खेलते हैं और तरह-तरह की हंसी-मजाक करते हैं।

क्यों कहूं वन की रोसनी, सीतल वाए खुसबोए।
ए जुबां न केहे सके, जो सुख आतम होए।। २७ ।।

वन की रोशनी बड़ी सुन्दर है। यहां शीतल, खुशबूदार वायु है जिससे आत्मा सुखी होती है, परन्तु जबान की कहनी से बाहर है।

इन बन की हद धामलों, और झरोखों दिवाल।
इन बन में कई हिंडोले, होत रंग रसाल।। २८ ।।

कुंज वन से लगती हुई बट पीपल की चौकी के वृक्ष रंग महल की दीवार और झरोखे तक शोभा देते हैं। इस बट पीपल की चौकी में कई तरह के हिंडोले आते हैं और बड़ा आनन्द होता है।

चौक चार उपरा ऊपर, बट पीपल बखान।
बराबर थंभ छातें, ठौर सोभित सब समान।। २९ ।।

बट पीपल की चौकी में नीचे-ऊपर चार भोम हैं। इनके पेड़ थंभों के समान शोभा देते हैं। उनके ऊपर छतें आई हैं, सब एक ही शोभा है।

Nijanand App

घाट के दोऊ तरफ पुल, मिले दोऊ तरफों इन।
बन नारंगी चन्द्रवा, पोहोंच्या दिवालों रोसन।। ३० ।।

बट के घाट के एक तरफ बट का पुल है, दूसरी तरफ नारंगी का घाट है जो आगे बट पीपल की चौकी से मिलता है। बट पीपल की चौकी के वृक्ष धाम की दीवार से लगते हैं।

चार थंभ बराबर सोभित, उपरा लग ऊपर।
घट बढ़ न दोऊ तरफों, ए सोभा अति सुन्दर।। ३१ ।।

इस बट पीपल की चौकी के ऊपर चार भोम हैं। शोभा घट-बढ़ कहीं नहीं है। बहुत सुन्दर है।

द्वार समान सब देखत, ऊपर सोभा अपार।
माहें खट छपरें बन की, हिंडोले छातें चार।। ३२ ।।

बट पीपल की चौकी में सभी दरवाजे एक समान, सौ-सौ मन्दिर के हैं और इनके ऊपर चार छतों की शोभा है। इनमें खटछप्पर के हिंडोले एक भोम में एक सौ तीस, चार भोम में पांच सौ बीस लगे हैं।

कई हिंडोले एक छातें, छातें छातें खट अनेक।
चारों तरफों हार देखिए, जानों एक एक थें विसेक।। ३३ ।।

एक छत में कई हिंडोले हैं और इस तरह नीचे ऊपर छतों में कई हिंडोले हैं। चारों तरफ हिंडोलों को देखें तो एक से एक चढ़ती नजर आती हैं।

राज स्यामाजी सखियां, जब इत आए हींचत।
इन समें बन हिंडोले, सोभा क्यों कर कहूं सिफत।। ३४ ।।

श्री राजश्यामाजी, सखियां कभी-कभी आकर यहां झूला झूलती हैं। उस समय वन के हिंडोलों की सिफत का वर्णन कैसे करूं?

जवेर भी रस जिमी के, और जिमीको रस बन।
नरमाई फूल पात अधिक, ना तो दोऊ बराबर रोसन।। ३५ ।।

बट पीपल की चौकी की जमीन और वहां का सब वन का रस जवेरों (हीरे जवाहरातों) की तरह चमकते हैं। इनके फूल और पत्ते अत्यन्त नर्म हैं और फूल-पत्तों की रोशनी एक सी है।

चढ़ आवत बादलियां, सेहेरें घटा तरफ चार।
इन समें बन सोभित, माहें बिजलियां चमकार।। ३६ ।।

यहां चारों तरफ से बादल घिरकर आते हैं, बिजली चमकती है। तब वन की शोभा अधिक बढ़ जाती है।

बोए आवे सुगंध सीतल, उछरंग होत मलार।
गाजत गंभीर मीठड़ा, इन समें सोहे सिनगार।। ३७ ।।

यहां की हवा बड़ी शीतल और सुगन्धित है। वर्षा ऋतु में बड़ा आनन्द आता है। बादल मीठे स्वर में गरजते हैं। इस तरह से सुन्दर शोभा दिखाई देती है।

Nijanand App

हंस चकोर मैना कोइली, करें बनमें टहुंकार।
बोलें बपैया बांबी दादुर, करें तिमरा भमरा गुंजार।। ३८ ।।

हंस, चकोर, कोयल और पपीहा, दादुर (मेढक) झींगुर (तिमरा) और भौंरा मधुर स्वरों में गुंजन करते हैं।

हिंडोले हजार बारे, स्याम स्यामाजी हींचत।
अखंड सुख धनी धाम बिना, कौन देवे इन समें इत।। ३९ ।।

श्री राजजी, श्री श्यामाजी तथा बारह हजार सखियां हिंडोलों में झूलती हैं। ऐसे अखण्ड सुख धाम धनी के बिना कौन दे सकता है?

ए निकुंज बन सब लेयके, जाए पोहोंच्या ताल।
जमुना धाम के बीच में, ए बन है इन हाल।। ४० ।।

यह कुंज-निकुंज का वन हौज कौसर तालाब, जमुनाजी और रंग महल के बीच में शोभा देता है।

जित बोहोत रेती मोती पतले, गड़त घूटन लो पाए।
इत सबे मिल सखियां, रब्द गुलाटें खाएं।। ४१ ।।

यहां पर बहुत बारीक रेत होने के कारण घुटने तक पैर रेत में धंस जाते हैं। यहां सब सखियां मिलकर आपस में होड़ बांधकर दौड़ती हैं।

इत बोहोत रेतीमें सखियां, दौड़ दौड़ देत गुलाटें।
कूदें दौड़े ठेकत हैं, रेत उड़ावें पांउं छांटें।। ४२ ।।

और गुलाटियां खाती हैं, कई सखियां दौड़कर उछलती हैं और पांव से रेत को उड़ाती हैं।

कबूं दौड़त राज सखियां, सबे मिलके जेती।
हांसी करत जमुना त्रट, जित बोहोत गड़त पांउं रेती।। ४३ ।।

कभी श्री राजजी और सखियां दौड़ती हैं तो कभी सब सखियां मिलकर दौड़ती हैं, क्योंकि रेती में पांव घस जाने से जमुनाजी तट पर बड़ी हंसी होती है।

अनेक रामत रेतीय में, बहुविध इन ठौर होत।
ए बन स्याम स्यामाजी को, है हांसी को उद्दोत।। ४४ ।।

इस तरह से कुंजवन की रेती में तरह-तरह से बहुत खेल होते हैं। इस वन में श्री राजजी, श्री श्यामाजी हंसी के वास्ते ही आते हैं।

कहूं कहूं सखियां ठेकत, माहें रेती रब्द कर।
पीछे हंस हंस ताली देयके, पड़त एक दूजी पर।। ४५ ।।

कभी-कभी सखियां आपस में होड़ लगाकर छलांग लगाती हैं और फिर एक-दूसरे पर ताली बज़ा बजाकर हंसती हैं।

एकल छत्री सब बनकी, भांत चंद्रवा जे।
फेर फेर उमंग होत है, ठौर छोड़ी न जाए ए।। ४६ ।।

पूरे कुंजवन के ऊपर चंद्रवा की माफिक एक छतरी की छाया है। यहां की शोभा को देखने के लिए बार-बार इच्छा होती है और यह वन छोड़ा नहीं जाता।

Nijanand App

फेर फेर इतहीं दौड़त, कहूं ठेकत दौड़त गिरत।
सब सखियां मिल तिन पर, फेर फेर हांसी करत।। ४७ ।।

यहां पर बार-बार दौड़ती हैं, छलांग लगाती हैं और गिरती हैं। फिर आपस में मिलकर एक-दूसरे की हंसी करती हैं।

केते खेल कहूं सखियन के, जो करत बन नित्यान।
खेल करें स्याम स्यामाजी, सखियों खेल अमान।। ४८ ।।

सखियों के खेल का कहां तक बयान करूं जो वनों में रोज ही करती हैं। श्री राजजी, श्री श्यामाजी और सखियां सब मिलकर आनन्द लेते हैं। इसकी उपमा नहीं है।

महामत कहे ऐ मोमिनों, देखो ताल पाल के बन।
ए लीजो तुम दिल में, करत हों रोसन।। ४९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! अब हौज कौसर के ताल की पाल (पुल, तालाब की मेड़) के ऊपर के वनों की शोभा देखो और अपने दिल में धारण करो। मैं तुमको बताती हूं।

।। प्रकरण ।। ७ ।। चौपाई ।। ४६८ ।।

हौज कौसर ताल जित जोए कौसर मिली

अब कहूं मैं ताल की, अन्दर आए सको सो आओ।
जो होवे रूह अर्स की, फेर ऐसा न पावे दाओ।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी! अब मैं हौज कौसर ताल का वर्णन करती हूं। तुम में से जो आ सकते हैं वह मेरे पास अन्दर आ जाओ। जो परमधाम की रूहें हैं उनको ही मैं कहती हूं कि फिर ऐसा समय नहीं मिलेगा।

एक हीरे की पाल है, तिनमें कई मोहोलात।
गिरद द्योहरी कई बन हैं, क्यों कहूं फल फूल पात।। २ ।।

हौज कौसर के ताल की पाल एक हीरे की है। उसमें कई महल बने हैं। चारों तरफ घेरकर एक सौ अट्ठाईस द्योहरियां हैं। कई तरह के वनों की शोभा है जिनके फल, फूल और पत्ती की शोभा कैसे बताऊं?

जब आवत इत अर्स से, चढ़िए इन घाट ताल।
चबूतरे दोए द्योहरी, सीढ़ियां चढ़ते होत खुसाल।। ३ ।।

जब परमधाम से श्री राजश्यामाजी और सखियां आती हैं, तो झुण्ड के झुण्ड द्वार से तालाब पर चढ़ते हैं। यहां दो चबूतरे और दो द्योहरी उनके ऊपर बनी हैं। सीढ़ियां चढ़ते समय इन्हें देखकर बहुत खुशी होती है।

ए जो कही दो द्योहरी, तिन बीच पौरी दोए।
एक आगूं चबूतरा, दूजी आगूं द्योहरी सोए।। ४ ।।

यह जो दो द्योहरी बताई हैं उनके बीच दो मेहराब आई हैं। पहली मेहराब के आगे चबूतरा आया है और दूसरी मेहराब के आगे द्योहरी आई है यह मेहराबें २५० मन्दिर की चौड़ी आई हैं।

Nijanand App